IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बिहार में किसान सभा के प्रमुख नेताः एक अवलोकन

डॉ रंजीत कुमार

+2 Teacher, Ashok Inter School Daudangar, Aurangabad Bihar-824143

सम्राज्यवादी शासन की अवधि में देश की सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक समस्या किसानों की गरीबी, बेरोजगारी और ऋणग्रस्तता रही। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान भारत को कृषि प्रधान देश तो घोषित किया गया पर उनके वास्तविक हितों की परवाह न कर उसे संघर्ष का मुद्दा कम ही बनाया गया। कांग्रेस ने तो किसानों के हितो को नजरंदाज किया ही कम्यूनिस्ट पार्टी ने भी मजदूरों के साथ–साथ किसानों को भी संगठित करने की अनिवार्यता पर समुचित और समय से ध्यान नहीं दिया। अतः बिहार के किसानों के प्रश्न को किसान सभा के नेताओं यथा स्वामी सहजानंद सरस्वती, पंडित कार्यानंद शर्मा , पंडित यदूनंदन शर्मा महापंडित राहुल सांकृत्यायन यमुना कार्यी तथा पंडित रामनंद मिश्र ने सरकार के समक्ष बखूबी रखा।

स्वामी सहजानंद सरस्वतीः

स्वामी सहजानंद सरस्वती संगठित भारतीय किसान आंदोलन के प्रणेता, पथ प्रदर्शक और अग्रणी जननायक थे। भारतीय किसान आंदोलन के लम्बे इतिहास में वे अप्रतिम हैं और तमाम नामी–गिरामी राष्ट्रीय नेताओं के भीड़ में बिल्कुल अलग से पहचाने जा सकते हैं। संगठित किसान सभा आंदोलन के क्रांतिकारी महानायक के रूप में उनके व्यक्तित्व का विकास धीरे–धीरे अनेक मोड़ों और पड़ावों से गुजर कर हुआ।[1]

दरअसल में स्वामी सहजानंद सरस्वती जन्म से बिहारी नहीं थे उन्होंने बिहार को अपना कर्म क्षेत्र बनाया और जीवनपर्यन्त यहाँ के होकर रह गये। उनका जन्म 1899 ई0 में उतर प्रदेश के गाजीपुर जिला के देव गांव में हुआ था। उनका मूल नाम नवरंग राय था और उनके पिता का नाम बेनी राय था। आरम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त उन्होनें गाजीपुर जर्मन मिशनरी स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। 1906 ई0 में उन्होनें सन्यास धारण कर लिया। बनारस में उन्होंने संस्कृत व्याकरण एवं हिन्दू धर्म की विभिन्न शाखाओं का गहन अध्ययन किया। वे स्वामी अच्युतानंद से प्रभावित हुए। वे भूमिहारो को ब्राह्मणों के सामान उच्च सामाजिक दर्जा दिलाने के लिए चल रहे आन्दोलन का अभिन्न हिस्सा बन गये। हिन्दू धर्म में और संस्कृति का विशेष अध्ययन करने हेतु वे दरभंगा गये और बिहार को करीब से जानने का उन्हें पहला अवसर प्राप्त हुआ। बिहार के प्रबुद्ध लोगों से उनका परिचय हुआ। इन लोगों में सर गणेश दत्त सिंह भी थे। गणेश दत्त सिंह के साथ उन्होंने बिहार के भूमिहार लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के विषय में गहन चिंतन किया। उन्होंने महसूस किया कि सामंतवादी रवैया अपनाने के कारण भूमिहारों का अपेक्षित विकास नहीं हो पा रहा था। शीघ्र ही गांधी एवं उनके कार्यक्रमों की ओर वे आकर्षित हुए। गांधी जी असहयोग आन्दोलन उन्होंने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। बिहार में शाहाबाद एवं बिहटा में उन्होंने खादी एवं मद्य–निषेध आंदोलन को सफल बनाया। अपनी गतिविधियों को और अधिक प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए उन्होंने बिहटा में 'सीताराम आश्रम' की स्थापना की। शीघ्र ही वे कांग्रेस पार्टी के सक्रिय सदस्य बन गये। गांधी जी के सविनय अवज्ञा आंदोलन में उन्होंने बढ़–चढ़कर भाग लिया लेकिन कांग्रेसी नेताओं के रवैया से वे अत्यंत दुःखी हुए और गांधी के नेतृत्व से उनका मोह भंग होने लगा। उन्होंने महसूस किया कि कांग्रेस पर पूंजीपति एवं जमींदार वर्ग का वर्चस्व कायम था और वह किसान–मजदूर वर्ग के लोगों के हितों पर कोई विशेष ध्यान नहीं दे पर रही थी। अतः उन्होंने जमींदारों एवं सरकारी अधिकारियों के उत्पीड़न के विरूद्ध किसानों–मजदूरों को संगठित करना शुरू किया।[2]

1928 में सहजानंद ने पश्चिमी पअना किसान सभा का गढ़न किया। 1929 ई0 में उनके नेतृत्व में सोनपुर में बिहार प्रांतीय किसान सभा का गठन हुआ। वे उस सभा के अध्यक्ष बने तथा श्रीकृष्ण सिंह उसके सचिव। यमुना कार्यी , गुरू सहाय लाल और कैलाश लाल उनके प्रमंडलीय सचिव बने। शीघ्र ही किसान सभा एक जबर्दस्त ताकत के रूप में उभरी। सारे प्रांत में किसान आंदोलन ने जोर पकड़ा। स्वामी सहजानंद ने महसूस किया कि जब तक किसानों की अखिल भारतीय संगठन की स्थापना नहीं हो जाती किसानों को अपना वाजिब हक प्राप्त नहीं हो पायेगा। इसी उद्देश्य से उन्होंने 1936 ई0 में लखनऊ में अखिल भारतीय किसान सभा का गठन किया। वे स्वयं उसके प्रथम अध्यक्ष बने। प्रो0 एन0 जी0 रंगा को संगठन का सचिव बनाया गया। उन्होंने कांग्रेस से आग्रह किया कि वह किसानों की मांगो को अपने कार्यक्रम में शामिल करें। जवाहरलाल नेहरू का ध्यान आकृष्ट करने में वे सफल हुए। फलतः कांग्रेस एवं किसान सभा के बीच समझौता हुआ और कांग्रेस ने अपनी चुनावी घोषण–पत्र में किसानों की मांगों को शामिल किया। फरवरी 1937ई0 में कई प्रान्तों में विद्यायिका के लिए चुनाव हुए और कांग्रेस को अपार जनसमर्थन हासिल हुआ। बिहार में श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व में सरकार का गठन हुआ। स्वामी सहजानंद ने मांग की कि किसानों की मांगों को तत्काल स्वीकार कर लिया जाय। जमींदारी प्रथा का उन्मूलन हो और किसानों के उपर कर्ज का बोझ अधिक न हो। कांग्रेस की सरकार उनकी कसौटी पर खरा नहीं उतरी। अतः उन्होने कांग्रेस की सरकार की भर्त्सना की और बड़ी संख्या में किसानों को संगठित कर बिहार विधानसभा का घेराव किया। उनके नेतृत्व में बिहार के अनेक हिस्सों में वकाश्त आंदोलन शुरू हुआ। उनके सहयोगी कार्यानंद शर्मा ने बड़हिया टाल में वकाश्त आंदोलन की शुरूआत की जो अंततः साम्यवादी आंदोलन में परिणत हो गयी। स्वामी सहजानंद स्वयं मार्क्सवादी विचारधारा की ओर झुकने लगे। कांग्रेस समाजवादियों से द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उनके मतभेद हो गये। स्वामी सहजानंद ने साम्यवादियों के सहयोग से मजदूर एवं

किसानों के संघर्ष को स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ाने में विश्वास किया। फलतः किसान सभाओं पर सम्यवादियों की पकड़ मजबूत होती गयी। कालान्तर में स्वामी सहजानंद को साम्यवादियों से भी शिकायत होने लगी और उन्होंने स्वतंत्र मार्ग का अनुसरण करने का निश्चय किया। भारत आजाद हुआ। किसानों की समस्या और समाधान ही उनके चिंतन एवं गतिविधियों का केन्द्र बना रहा। उन्होनें कई पुस्तकों की रचना की इनमें 'किसान क्या करे ?', 'किसान कैसे लड़तें हैं?' 'मेरा जीवन संघर्ष', 'क्रांति और संयुक्त मोर्चा' और 'किसान सभा के संस्मरण' प्रमुख्य। किसानों की समस्या पर विचार करने हेतु उन्होंने 'हुंकार' नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन किया। निश्चित तौर पर वे बिहार तथा भारत के किसान आंदोलन के सबसे महान नेता के रूप में उभरे। उनकी मृत्यु 26 जून 1950 को हो गयी।[3]

कार्यानंद शर्मा:

बिहार के किसान आंदोलन में स्वामी सहजानंद सरस्वती के बाद जो दूसरे नेता राष्ट्रीय रंगमंच पर उभर कर आये वे पं0 कार्यानंद शर्मा थे। पं0 कार्यानंद शर्मा का जन्म आधुनिक लखीसराय जिला में सहुर नामक ग्राम में सन 1901 ई0 में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था।[4] बिहार में असहयोग आंदोलन में वे सक्रिय रूप से भाग लिए। 1921 ई0 में तिलक स्वराज फंड जमा करने के लिए गांवों को खूब दौरा किया। गांधी जी की भक्ति ने कार्यानंद शर्मा को प्रतिदिन नियमित रूप से चरखा पर काम करने के लिए प्रेरित किया।[5] 1921 के आसपास के आंदोलन में कार्यानंद शर्मा गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हें एक साल कि सजा हुई।[6] जुलाई 1922 में वे जेल से बाहर निकले। कांग्रेस के गया अधिवेशन में उन्होंने भाग लिया। 1927 ई0 में गिद्धौर और खैरा राज्य के कारिन्दों के अत्याचार से तंग आकर चानन–परगने के किसानों ने जब गुहार की तो कार्यानंद शर्मा उनकी मदद में दौड़ पड़े।[7] किसानों की शिकायत को लेकर कार्यानंद शर्मा गिद्धौर राजा और खैरा राज्य के मैनेजर से कई बार मिले।

स्वामी सहजानंद सरस्वती के प्रयास और कांग्रेस नेताओं के सहयोग से सोनपुर में नवंबर 1929 ई0 में बिहार प्रांतीय किसान सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन हुआ। कार्यानंद शर्मा भी किसान सभा के संगठन के साथ बंध गये। 1931 ई0 में मुंगेर जिला किसान सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन घोसेठ गांव में हुआ। कार्यानंद शर्मा इस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे।[8] वर्ष 1934 में मुंगेर जिला किसान सभा का दूसरा अधिवेशन नवंबर जमुई में हुआ। कार्यानंद शर्मा सर्वसम्मति से मंत्री चुन लिए गए। जमुई में ही चानन के किसानों के पक्ष में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव हुआ। चानन के किसान संघर्ष ने सम्पूर्ण बिहार के किसान आंदोलन को प्रभावित किया। कार्यानंद शर्मा चानन आंदोलन समाप्त होते ही बडहिया टाल वकाश्त संघर्ष में जुट गये। बडहिया टाल आंदोलन 1936 ई0 के जून मे शुरू होकर 1939 ई0 के मध्य तक चलता रहा।

1945–47 के बीच बिहार में व्यापक किसान संघर्ष हुआ जिसका नेतृत्व कार्यानंद शर्मा ने बखूबी किया। 1945 ई0 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी, बिहार प्रादेशिक कांग्रेस कमिटी तथा कांग्रेस के साधारण सदस्यता से शर्मा जी ने त्यागपत्र दे दिया। सन् 1946 ई0 में वे श्रीकृष्ण सिंह के विरूद्ध कम्यूनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार थे।[9] सन् 1947 ई0 में उत्तर प्रदेश के सिकंदराबाद में अखिल भारतीय किसान सभा के कार्यानंद शर्मा अध्यक्ष निर्वाचित हुए। पांच वर्षों तक उस पद पर शर्मा जी बने रहे। बिहार राज्य किसान सभा के लगभग जीवनपर्यंत वे अध्यक्ष रहे। सन् 1957 में कार्यानंद शर्मा सूर्यगढ़ा क्षेत्र से बिहार विधानसभा सदस्य चुन गये। वह 1957 से 1962 तक कम्यूनिस्ट विधायक दल के नेता के रूप में बिहार विधानसभा में रहे। 19 नवंबर 1965 को उनका देहांत हो गया।[10]

यदुनन्दन शर्मा:

पं0 यदुनंदन शर्मा एक समर्पित स्वतंत्रता सेनानी थे। वह किसानों के निर्भीक, लड़ाकू नेता थे। महात्मा गांधी के द्वारा छेड़े गये नमक सत्याग्रह आंदोलन से उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन का प्रारंभ किया था, किंतु जीवन के अनुभव में उन्हें गांधीवाद पर विश्वास नहीं रह गया। किसानों के लोकप्रिय नेता स्वामी सहजानंद सरस्वती के साथ किसान आंदोलन के निर्माण और विकास में अंत तक लगे रहे। उनके लिए किसी आंदोलन, किसी राजनितिक के ठीक होने की एकमात्र कसौटी थी–किसान मजदूर हित, शोषित पीड़ित जनता की हित और किसान–मजदूर राज्य।[11]

ऐसे विचार वाले महान् तपस्वी यदुनंदन शर्मा का जन्म आधुनिक अरवल जिला के मंझीयावां नामक ग्राम में बसंत पंचमी के दिन में 1896 ई0 में एक गरीब किसान के घर हुआ था।[12] 1933 ई0 में यदुनंदन शर्मा किसान सभा में शामिल हो गये और नियायतपुर में किसान आश्रम बनाकर अत्यंत पद्दलित तथा भयत्रस्त किसानों में रूह फूकनी शुरू की। 18 जून 1833 ई0 को बिहार प्रदेश किसान सम्मेलन ने गया जिला के किसानों की जांच के लिए एक जांच समिति बनाई जिसके एक सदस्य यदुनंदन शर्मा भी थे। समिति के सदस्यगण गया जिला के अनेक गांवों में गये और किसानों की स्थिति की जांच कर 80 पृष्ठों में "गया जिला के किसानों की करूण कहानी" के नाम से एक पुस्तिका प्रकाशित किया।

20 सितंबर 1933 ई0 में 60 हजार से लगभग एक लाख लोगों का शानदार प्रदर्शन गया में यदुनंदन शर्मा के नेतृत्व में हुआ। सन् 1937 में कांग्रेस मंत्रिमंडल बिहार में बनने के बाद भी यदुनंदन शर्मा को किसानों की कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी और कई बार जेल की हवा भी खानी पड़ी। 1938 में वारसलीगंज के खेड़ा गांव का किसान सत्याग्रह यदुनंदन शर्मा के नेतृत्व में बिहार में ही नहीं अपितु भारत के किसान आंदोलन के इतिहास में भी उचाँ स्थान रखता है।[13] सन् 1939 के अगस्त सितम्बर में मंझीयांव के किसानों का ऐतिहासिक सत्याग्रह हुआ। मखदुमपुर अंचल के सतीथान,हिसुआ अंचल के सिन्दुआरी, औरंगाबाद के फेसर आदि दर्जनों स्थानों में किसान आंदोलन का नेतृत्व यदुनंदन शर्मा ने किया। इसी वर्ष उनकी एक ऐतिहासिक पुस्तिका 'चिंगारी' निकल। इस पुस्तिका ने तहलका मचा दिया। सन् 1940 ई0 में अपने भूमिगत जीवन में 'लंका दहन' नोटिस निकाली। 15 अगस्त 1947 को देश की आजादी मिलने के बाद यदुनंदन शर्मा ने सदा सर्वथा के लिए कांग्रेस से अपना सम्बंध विच्छेद कर लिया।

ऐसे समर्पित स्वतंत्रता सेनानी तथा किसानों के निर्भिक लड़ाकू नेता 3 मार्च 1975 को देहांत हो गया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में वर्त्तमान एवं भावी पीढ़ियों को हमेशा प्रेरणा मिलती रहे।

राहुल सांकृत्यायन:

महापंडित राहुल सांकृत्यायन का नाम देश के महान विभूतियों में अग्रणी है। वे एक प्रकाण्ड विद्वान, अन्वेषक, लेखक, यायावर, राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतक थे। स्वामी सहजानंद के समान वह भी उतरप्रदेश में पैदा हुए थे। लेकिन उन्होंने बिहार को ही अपना कर्मस्थली बना लिया था। राहुल सांकृत्यायन अब्बल दर्जे के विद्वान थे। वे अनेक भारतीय और विदेशी भाषाओं के ज्ञाता थे। उन्होंने कई पुस्तकों की रचना की। इसमें मध्य एशिया का इतिहास, भारतीय दर्शन का दर्शन, वोल्गा से गंगा, पुरातत्व नियमावली, शासन शब्दकोष, मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी जीवन यात्रा महत्वपूर्ण है।

राहुल सांकृत्यायन सिर्फ उद्भर विद्वान एवं चिंतक ही नहीं थे अपितु वे महान राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता भी थे। वे शोषण एवं भयमुक्त समाज की स्थापना करना चाहते थे। उन्होंने भारत मं`चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया और कई बार जेल गये। असहयोग आंदोलन में उन्होंने सक्रिय भागीदारी की। लेकिन धीर–धीरे कांग्रेस से उनका मोहभंग हो गया। वे समाजवाद और फिर साम्यवाद विचारधार के करीब हो गये। वे

बिहार साम्यवादी दल और बिहार किसान सभा के संस्थापक सदस्यों में से थे। बाद में उनका साम्यवादियों से उर्दू के प्रश्न पर विभेद हो गया। स्वामी सहजानंद के वे सहयोगी बन गये और किसान आंदोलन में उन्होंने प्रायः प्राण फूंक डाला। सारण में उन्होंने वकाश्त आंदोलन का नेतृत्व किया और जमींदारों के कोप का भाजन बने। उनको लाठियों से पीटा गया तथा गिरफ्तार कर लिया गया।[14] उस वक्त छपरा के राजेन्द्र कॉलेज के प्राध्यापक मनोंरंजन की कविता "राहुल का खुन पुकार रहा" अखबारों में छपी। निश्चित तौर पर उनका संघर्ष बेकार नहीं गया। भारत आजाद हुआ। अपने जीवन के बचे समय को उन्होंने अध्ययन एवं अध्यापन में ही बिताया। 14 अप्रैल 1963 ई0 को उनकी मृत्यु हो गयी। राहुल बाबा, जिनपर बिहार की किसान–मजदूर जनता कुर्बान हो जाने के लिए जी जान से तैयार थी।[15]

संदर्भ सूचीः–

1. अवधेश प्रधान; स्वामी सहजानंद और किसान आंदोलन, संवेद, दिल्ली, नवम्बर 2009 पृ0 6
2. प्रमोदानंद दास एवं कुमार अमरेन्द्रः समकालीन विश्व एवं भारत, भाग–2 पटना, 2010 पृ0 236
3. विजय कुमार; स्वामी सहजानंद सरस्वतीः जीवन वृत एवं कृतित्व(स्मारिका), बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना, 2010
4. पुनम सिंह; किसान आंदोलन का सैद्धांतिक विकास, जानकी प्रकाशन, पटना,1996 पृ0 81
5. रेणु कुमारी; "बिहार के किसान आंदोलन में कार्यानंद शर्मा की भूमिका(1901–1965)" खुदाबख्श लाईब्रेरी जर्नल नं0 159, जनवरी–मार्च 2010, पटना, पृ0 160
6. पुनम सिंह; उपरलिखित, पृ0 93
7. वही.
8. पुनम सिंह; उपरलिखित,
9. त्रिवेणी शर्मा सुधाकर; अखिल भारतीय किसान सभा का गौरवशाली 60 वर्ष, तेलबिगहा, गया,1997
10. वही.
11. वही.,पृ 38
12. त्रिवेणी शर्मा सुधाकर; भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, ज्ञान गेह प्रकाशन, गया, पृ0 55
13. त्रिवेणी शर्मा सुधाकर; अखिल भारतीय किसान सभा का गौरवशाली 60 वर्ष , पृ0 41
14. प्रमोदानन्द दास एवं कुमार अमरेन्द्र; बिहारः इतिहास एवं संस्कृति
15. कुमार अमरेन्द्र; बिहार के किसान आंदोलन में राहुल सांकृत्यायन, पटना, 2002, पृ0 82